International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 53-55

हिंदी भाषा का वैश्विक धरातल

Dr. Ranjith M
Assistant Professor, Department of Hindi, MES Asmabi College, Padinjare Vemballur, Kerala, India

सारांश
हिन्दी राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा दोनों रूपों में भारत तथा आस पास के कुछ देशों में व्यवहृत होती रही है। स्वराज्य की प्राप्ति के बाद हिन्दी केवल भारत की राष्ट्रभाषा ही नहीं रह गई, बल्कि संविधान में भारत की राजभाषा के रूप में भी स्वीकृत किया गया| हिन्दी देश की प्रशासनिक न्यायिक, वाणिज्यिक और विधायी क्षेत्र की भाषा के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिंदी जोड़ने वाली भाषा है. संवेदनशीलता की भाषा है. संवेदना हृदय का आभूषण है. इससे समाज को सुसज्जित होना चाहिए. संवेदना के अभाव में साहित्य का सृजन असंभव है।

मूल शब्द : हिन्दी राष्ट्रभाषा, प्रशासनिक न्यायिक, वाणिज्यिक।

प्रस्तावना

विचारों का आदान-प्रदान या वाणी द्वारा अभिव्यक्ति ही भाषा है | भाषा का प्रारम्भिक रूप बोली है | भाषा सामाजिक सम्पति है जो अनुकरण से अर्जित की जाती है | भाषा मानव सम्प्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम है | वरिष्ट साहित्यकार अज्ञेय की राय में "भाषा कल्प वृक्ष के समान है | यदि भाषा को ठीक तरह से साधा जाय तो वह हमें सब कुछ दे सकती है |" हिन्दी राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा दोनों रूपों में भारत तथा आस पास के कुछ देशों में व्यवहृत होती रही है। स्वराज्य की प्राप्ति के बाद हिन्दी केवल भारत की राष्ट्रभाषा ही नहीं रह गई, बल्कि संविधान में भारत की राजभाषा के रूप में भी स्वीकृत किया गया | विश्व भर में हिंदी सीखने वालों की संख्या में जबरदस्त बडौती हुई है | भूमंडलीकरण के युग में हिंदी की भूमिका संपर्क, सम्प्रेषण और सानिध्य की है तथा जिसे हिंदी बखूबी निभा रही है | हिंदी अपनी भाषा में कई छोटे-छोटे रूप ले चुकी है जैसे साहित्यिक हिंदी, व्यवसायिक हिंदी, राजभाषा हिंदी, सिनेमाई हिंदी इत्यादि |

हिंदी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा है। हिंदी की भाषागत विशेषता भी यह है कि उसे सीखना और व्यवहार में लाना अन्यभाषाओं की अपेक्षा आसान है। हिंदी भाषा में एक विशेषता यह भी है कि वह लोक भाषा की विशेषताओं से संपन्न है |

भारत की राजभाषा का सवाल | एक ओर मानसिकता का सवाल है और दूसरी ओर वह हमारे राष्ट्रीय जीवन के उन बुनियादी मूल्यों से जुड़ा हुआ है | जिनके बगैर स्वतंत्रता अपनी गरिमा खो देती है। भारत की मानसिकता में बदलाव लाकर ही गांधी जी ने इस देश से अंग्रेज़ों के भय के भूत को भगा दिया | इस देश के करोड़ों मूक, निरीह और असहाय लोग जब अपने पैरों पर उठ खड़े हुए तो अंग्रेज़ी राज्य का सितारा सदा के लिए डूब गया। इसके लिए राष्ट्रीयता की जिस भावना को प्रज्वलित करने की ज़रूरत पड़ी थी, आज पुन: उस बुझती भावना को प्रबल बनाने की नितांत आवश्कता है | क्योंकि इसके बगैर हर राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के मार्ग में, बौने लोग छोटे-छोटे स्थानीय प्रश्नों के रोड़े अटकाते रहेंगे और भारत के विकास के महान् रथ को जिस रफ्तार से आगे बढ़ना चाहिए, उसमें अपेक्षित गति नहीं आ पाएगी |

हिन्दी फिल्में देश के साथ-साथ विदेशों में भी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी हैं। इस प्रकार इन फिल्मों ने देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी हिन्दी को प्रोत्साहित किया है। सिर्फ भारत के ही कलाकार विदेशों में लोकप्रिय नहीं, बल्कि कई विदेशी कलाकार हिन्दी फिल्मों की वजह से लोकप्रिय हो गए हैं। मेहँदी हसन व गुलाम अली (दोनों पाकिस्तानी गजल गायक) के हिन्दी गीत आज भारत में लोकप्रिय है|

किसी भी भाषा या धर्म के प्रचार प्रसार में संचार माध्यमो का विशिष्ट योगदान रहा है | विकास हमेशा पुरातन के मोह त्याग की मांग करती है | ब्लॉगिंग की दुनिया में हिन्दी ब्लॉगर दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ रहे हैं। अभिव्यक्ति की जितनी स्वतन्त्रता ब्लॉगिंग में है उतनी कहीं नहीं है।आज हिंदी भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है -हिंदी फिल्में, हिंदी गाने, हिंदी पत्र पत्रिकाओं, हिंदी टीवी चैनल, हिंदी में प्रचार तेजी से बढ़ रहे हैं | इलेक्ट्रॉनिक संचार-माध्यम और कम्प्यूटर आदि के उपयोग में हिंदी ने धीरे-धीरे अपनी जगह बना ली है। इससे एक तरफ इन माध्यमों से हिंदी का प्रसार हो रहा है, तो दूसरी तरफ हिंदी क्षेत्र में इलेक्ट्रोनिक यंत्रों का बाजार भी फैल रहा है। इससे हिंदी की अंतरराष्ट्रीय भूमिका मजबूत हो रही है।बीसवीं शती के अंतिम दो दशकों में हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है वेब, विज्ञापन, संगी, तसिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिंदी की मांग जिस तेजी से बढ़ी है वैसी किसी और भाषा में नहीं हुआ है |

आजकल हिन्दी विज्ञापन-जगत् पर छाई हुई है। विज्ञापन की हिंदी जनसंचार की हिंदी की एक बहुप्रयुक्त और विशिष्ट उपप्रयुक्ति हैं | हिन्दी में विज्ञापन रचनात्मक एवं शैली प्रधान होते हैं, विज्ञापन की भाषा सुगम, सरल एवं पठनीय होती है, वाक्य छोटे एवं बोलचाल की भाषा में आमतौर पर प्रचलित होते हैं। हिंदी विगाप्न की भाषा बनने पर एक आपत्ति है, विज्ञापनदाता जिन्हें भाषा से सिर्फ व्यापारिक मतलब होता है इसके व्याकरणया समाज पर पडनेवाले आसर से नहीं, अपने उत्पाद की गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीयता बताने के लिए भाषा के साथ प्रयोग करते रहते हैं | विज्ञापन की चर्चा के साथ उत्पाद और इसकी भाषा भी चर्चित होती जाती है.और बार बार की पुन्रावृत्ति सामाजिक निष्ठा में तब्दील हो जाती है | इस तरह से भाषा में बदलाव होता रहता है और वह कब सामान्य वैचारिक सम्प्रेषण का हिस्सा बनजाता है हमें पता ही नहीं होता |

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास को देखें तो वह कभी हिंदी गद्य के विकास और हिंदी के शब्द भंडार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है साथ ही कविता, कहा, नी निबंध, उपन्यास को जन सामान्य तक पहुँचाने का स्तुत्य प्रयास भी किया। लेकिन आज

की हिंदी पत्रकारिता हिंदी भाषा के अधोपतन की इबारत लिखने में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है। किसी भी दिन का हिंदी अखबार उठा कर देखें तो, कई बार ऐसा लगता है कि मानो देवनागरी लिपि में अंग्रेजी का अखबार पढ़ रहे हों। पिछले कुछ दशकों से खासकर नयी वैश्विक उदार आर्थिक नीति के लागू होने के बाद के दौर में पत्रकारिकता भी प्रभावित हुई।

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में दो तरह की संस्थाओं का योगदान है। प्रथम वर्ग में वे संस्थाएं आती हैं जिनका महत्वपूर्ण प्रमुख लक्ष्य सामाजिक सुधार तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण था । स्वदेशी भाषा के महत्व की सहज स्वीकृति सांस्कृतिक-सामाजिक नवजागरण में होती है। दूसरी और हिन्दी प्रचार-प्रसार में स्वैच्छिक संस्थाएं भी जोर आजमाइश कर रहीं थीं।

वाराणसी में नागरी प्रचारिणी, इलाहाबाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, ओड़िया राष्ट्र भाषा परिषद, पुरी; कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति बेंगलूर; केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरूवन्तपुरम; कर्नाटक हिन्दी प्रचार समिति; मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद, बेंगलूर; दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास; गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद; बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, बम्बई; हिन्दुस्तानी प्रचार सभा; महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे; हिन्दी विद्यापीठ, देवधर; हिन्दी प्रचार-सभा, हैदराबाद; असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी; प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद; मिजोरम हिन्दी प्रचार सभा, आइजोल; मणिपुर हिन्दी परिषद, इम्फाल; राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, सौराष्ट्र हिन्दी प्रचार समिति, राजकोट; हिन्दी प्रचार-प्रसार संस्थान, जयपुर; हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद; ओड़ीसा शिक्षा परिषद, कटक; बेलगांव विभागीय हिन्दी शिक्षा समिति, हुगली; अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली इत्यादि संस्थाओं ने हिन्दी भाषा को आमजन तक लाने में सृजनात्मक सेतु का कार्य किया है।

आर्य समाज की स्थापना गुजरात में जन्में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई नगरी में की थी ।सत्यार्थप्रकाश धर्मग्रन्थ हिन्दी में होने के कारण महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के सभी अनुयायियों ने तो हिन्दी सीखी ही, इसके साथ ही अन्य मतों के लोगों ने इसके गुण दोष जानने की दृष्टि भी हिन्दी सीखी जिससे एक लाभ यह हुआ कि हिन्दी का प्रचार व प्रसार हुआ। हिन्दी के प्रचार व प्रसार की दृष्टि से ही महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों, मुख्यतः सत्यार्थ प्रकाश, का अंग्रेजी व उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद करने की अनुमति नहीं दी थी जिसका यह प्रभाव हुआ कि देश विदेश में लोगों ने हिन्दी सीखी। महर्षि दयानन्द ने अपना समस्त पत्रव्यवहार हिन्दी में करके उस युग में एक महान क्रान्ति को जन्म दिया था। हिन्दी के सर्वाधिक प्रतिष्ठित पुरुष भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वामीजी के काशी के सत्संगों में सम्मिलित हुए थे और उन्होंने उनकी प्रशंसा की है | हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर प्रतीत होती है। अमेरिका सहित विश्व के अनेक राष्ट्रों के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन सतत जारी है। विश्व में ऐसी भी जगह हैं जहाँ भारतीय मूल के लोग नहीं हैं तब भी वहाँ पर हिन्दी बोली जाती है। विश्व भाषा के रूप में हिन्दी का विकास उसके गुणों के कारण ही हो रहा है। साहित्यिक, धार्मिक तथा सामाजिक चेतना के लिये हिन्दी की पहचान भारत के बाहर भी हुई है। फ्रांस, चीन, हाँगकाँग, सूडान, आस्ट्रेलिया, इजराइल आदि राष्ट्रों में हिन्दी के शिक्षण/अध्ययन की समुचित व्यवस्था है।

1964 से लेकर 1997 तक कैम्बिज यूनिवर्सिटी में हिंदी पढानेवाले प्रो. रोनाल्ड स्टुर्ट मेक्ग्रेगर पशिचमी दुनिया में हिंदी की सेवा की बहुत की है | प्रो. मेक्ग्रेगर ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल पर गंभीर शोध भी किया है | कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हिन्दी की कई हस्तलिखित पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनके आधार पर हिन्दी साहित्य के इतिहास में कुछ नई बातें जोड़ी जा सकती हैं। हिन्दी साहित्य की बहुत सी पाण्डुलिपियाँ ब्रिटिश म्यूजियम तथा इण्डिया ऑफिस लाईब्रेरी में सुरक्षित रखी हुई हैं। ब्रिटेन की गिलयिन राइट राही मासूम रजा का 'आधा गांव' और श्रीलाल शुक्ल के कालजयी उपन्यस 'राग दरबारी' का अंग्रेजी में अनुवाद किया है |

सोवियत संघ के अनेक प्राध्यापक, पत्रकार एवं साहित्य सेवी हिन्दी की श्रीवृद्धि में अनेक वर्षों से लगे हैं अनुवाद के माध्यम से हिन्दी को सोवियत संघ में लोकप्रिय बनाने में इन विद्वानों का योगदान अविस्मरणीय है। बारान्निकोव से लेकर प्रो. चेलिशेव, प्रो. दिम्शित्ज़ और अन्य अनेक विद्वान् हिंदी भाषा की सेवा कर रहे है| महाकवि तुलसीदास के रामचरित मानस का सफल रूसी अनुवाद वेरन्निकोव ने किया है। अन्य महत्वपूर्ण रूसी हिन्दी के विद्वान वी. चेरनीगोव, वी. क्रेस कोविन एवं बाबालिन हैं। रूस में हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के कार्य में सबसे बड़ा योगदान देने वाले भाषा-वैज्ञानिकों में से सबसे उल्लेखनीय हैं - अलिक्सेय बरान्निकफ़, वसीली बिस्क्रोव्नी, अलेग उल्तसिफ़ेरफ़, गिओर्गी ज़ोग्राफ़, व्लदीमिर लिपिरोव्स्की, येव्गेनी चेलिशेफ़, अलिक्सान्द्र सिन्केविच, ल्युदमीला ख़खलोवा, गुज़ेल ख़िलकोवा, येकतिरीना पानिना, आन्ना चिल्नाकोवा, यूल्या कोस्तिना आदि।

प्रवासी भारतीय दुनिया के अनेक भागों में काफ़ी बड़ी संख्या में फैले हुए हैं। इनमें हिन्दी के अलावा अन्य भाषा-भाषी भी हैं । पर अधिकांश में उनकी समान संप्रेषण भाषा हिन्दी बन गई है। विश्व के लगभग एक सौ पचास विश्वविद्यालयों में हिन्दी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा है। आज सम्पूर्ण विश्व में दो सौ पचास करोड़ से अधिक भारतवंशी रहते हैं, उन सबकी संपर्क-भाषा हिन्दी है। मारीशस, फीजी और सूरीनाम जैसे देशों में हिन्दी आज भी लोकप्रिय है। इन देशों से हिन्दी की अनेक पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है । फीजी के संविधान में तो संसद में हिन्दी के प्रयोग का भी प्रावधान किया गया है | फिज़ी में 'रेडियो नवरंग' एकमात्र ऐसा रेडियो स्टेशन है, जो 24 घण्टे हिंदी कार्यक्रम पेश कर रहा है । फिज़ी सरकार सूचना-मंत्रालय के माध्यम से 'नवज्योति' नामक त्रैमासिक हिंदी-पत्रिका का भी प्रकाशन करती है, जिसका विषय सरकारी कार्यों और उपलब्धियों पर आधारित होता है । डॉ. विवेकानन्द शर्मा, श्री जे.एस. कवल, श्री बलराम वशिष्ठ जैसे अनेक लोगों ने अपनी रचनाओं के बल पर हिन्दी के भण्डार को समृद्ध किया है।

मॉरीशस द्वीप ने हिन्दी साहित्य के विकास में पर्याप्त योगदान किया है। क्रियोल मिश्रित भोजपुरी यहाँ की जनता में प्रयुक्त होती है । इस भाषा में सर्वनाम, विभक्तियां, तथा क्रियायें हिन्दी की होती हैं पर शेष शब्द क्रियोल से लिये होते हैं। मारीशस के लोग तो हिन्दी को अपने जीवन का अविच्छिन्न अंग मानते हैं | ब्रजेंद्र कुमार भगत 'मधुकर,अभिमन्यु अनत, सोमदत्त बखोरी, अलका धुन्पत प्रो. वासुदेव विष्णु दयाल एवं जयनारायण राय, जैसे साहित्यकार साहित्य का उच्चा आदर्श स्थापित कर चुके है |

जापान में हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में लगे हुए प्रो0 अकीय ताकाहाशी, प्रो0 फुजीई, योशिफुमी, मिजनू आदि जापानी विद्वानों और बंगलादेश में प्रो. अहसान और तालुकदार, चीन के प्रो. लयूकोनान, ताज़किस्थान के राज्बोव हबीबुल्लो, अमरीका के देवीनान्ग्रानी आदि के नाम भी यहाँ उल्लेख्य है | चीन का भारत से बहुत पुराना संबंध रहा है। चीनी यात्री फाह्यान, ह्वेनसांग जैसे विद्वानों ने चीनी संस्कृति तथा समाज से भारत को परिचित कराने में अहम् भूमिका निभाई। पेइचिंग यूनिर्विसिटी के सेंटर फॉर इंडियन स्टडीज के अध्यक्ष प्रो. च्यांगचिंगख्वेह ने चीन में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1975 ई. में हिन्दी-भाषा का व्याकरण अमेरिकी निवासी सैमुल कैलाग ने हिन्दी का अनुशीलन करके तैयार किया । हिन्दी

व्याकरण की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है । अमेरिका से प्रकाशित होने वाली हिन्दी पत्रिकाओं में 'सौरभ' विश्वा ओरे 'विश्व-विवेक' के नाम उल्लेखनीय हैं । आस्ट्रेलिया में न्यू साउथ वेल्स से मासिक पत्रिका 'हिंदी समाचार पत्रिका', ब्रिटेन से प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी-पत्रिका 'प्रवासिनी', पुरवाई, बर्मा से मासिक पत्रिका 'ब्रह्मभूमि', गुयाना से मासिक पत्रिका 'ज्ञानदा', सूरीनाम से 'आर्यदिवाकर' और मासिक पत्रिका सरस्वती आदि का प्रकाशन हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप का ठोस प्रमाण प्रस्तुत करते हैं|

हिन्दी अपने प्रयास से विश्व के कोने-कोने में पहुंची है और पहुंच रही है । भूमंडलीकरण के इस दौर में टी.वी. हिन्दी फिल्में, दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका का निर्वाह किया है । हिन्दी की लोकप्रियता देखते हुए तमाम विदेशी चैनलों ने अपने कार्यक्रम हिन्दी में प्रसारित करने प्रारंभ कर दिए हैं । जैसे डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफी आदि । इसके अतिरिक्त कई विदेशी फिल्में और धारावाहिक भी हिन्दी में आ रहे हैं। परंतु हमारे यहां की सरकारों का रवैया हिन्दी के प्रति ढुलमुल ही रहा। यह चिंतनीय है।

हिन्दी भाषा अब दैनंदिन जीवन से लेकर विज्ञान-प्रौद्योगिकी तथा व्यापार-प्रबन्धन आदि प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्शा चुकी है। 'भाषा के इस नव्यतम रूप का युगानुकूल परिवर्तन एवं नवसृजन अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है |विश्वस्तर पर बढ़ रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक अन्तः सम्बन्धों के कारण वैचारिक स्तर पर एक वैश्विक चेतना का प्रादुर्भाव हो रहा है |विश्व वाणी हिन्दी के उन्नयन और उत्थान में में हमें प्रभावी भूमिका निभाना है|

गोवा की राज्यपाल महामहिम मृदुला सिन्हा जी की बातें दोहराते हुए मैं समाप्त क्र रहा हूँ, ''हर भारतीय के हृदय को स्पंदित करने वाली भाषा है हिंदी | हिंदी जोड़ने वाली भाषा है. संवेदनशीलता की भाषा है. संवेदना हृदय का आभूषण है. इससे समाज को सुसज्जित होना चाहिए. संवेदना के अभाव में साहित्य का सृजन असंभव है. हिंदी बोलते रहिए, अभ्यास कीजिए, अपने घर-परिवार में हिंदी को प्रतिस्थापित करें, वह दिन दूर नहीं जब विश्व के आँगन में हिंदी 'तुलसी चौरा' की तरह अवश्य स्थापित होगी.''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संविधान में हिंदी – डॉ.लक्ष्मी मल्ल सिंघवी
2. राजभाषा हिंदी और उसका विकास - हीरालाल बचौतिया
3. डॉ.आर सुरेन्द्रन का भाषण
4. भारत की भाषा समस्या – डॉ. रामविलास शर्मा
5. अनुवाद का सामाजिक परिप्रेक्ष्य – डॉ दिलीप सिंह